SHODH SAGAR®
Universal Research Reports
ISSN: 2348-5612 | Vol. 11 | Issue 4 | Jul – Sep 2024 | Peer Reviewed & Refereed

उच्च शिक्षा में नई शिक्षा नीति और शिक्षक की बदलती भूमिका

डॉ.जितेंद्र कुमार*
एसोसिएट प्रोफेसर
समाजशास्त्र विभाग
एस. एम. कॉलेज चंदौसी

Published: 31/092024

Check for updates

* Corresponding author

सार

यह शोध पत्र उच्च शिक्षा में नई शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में शिक्षकों की भूमिका में हो रहे परिवर्तनों का विश्लेषण करता है। नई शिक्षा नीति का उद्देश्य शिक्षा को अधिक समावेशी, सुलभ और गुणवत्तापूर्ण बनाना है, जिससे विद्यार्थियों का समग्र विकास हो सके। इसमें शिक्षकों की भूमिका पारंपरिक शिक्षा पद्धतियों से बदलकर विद्यार्थियों के मार्गदर्शक और सलाहकार के रूप में विस्तृत हो गई है। साथ ही, उन्हें डिजिटल तकनीक, शोध और नवाचार में कुशल बनने की आवश्यकता है। यह शोध शिक्षकों द्वारा सामना की जा रही चुनौतियों और उनके समाधान पर भी प्रकाश डालता है, जिसमें प्रशिक्षण कार्यक्रम और तकनीकी ज्ञान की भूमिका प्रमुख है।

मुख्य शब्द: नई शिक्षा नीति , शिक्षकों की भूमिका, डिजिटल साक्षरता, उच्च शिक्षा, शिक्षा में नवाचार।

परिचय

भारत में शिक्षा प्रणाली का विकास समय-समय पर बदलती सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक परिस्थितियों के अनुसार हुआ है। उच्च शिक्षा, जो देश के विकास और उन्नति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, एक लंबे समय से विभिन्न चुनौतियों का सामना कर रही थी। 21वीं सदी में वैश्विक प्रतिस्पर्धा, तकनीकी विकास और सामाजिक आवश्यकताओं ने शिक्षा प्रणाली में व्यापक बदलाव की आवश्यकता को जन्म दिया। इसी पृष्ठभूमि में, भारत सरकार ने 2020 में नई शिक्षा नीति (NEP) को लागू किया, जिसका उद्देश्य शिक्षा को अधिक समावेशी, लचीला, और गुणवत्तापूर्ण बनाना है।

ISSN: 2348-5612 | Vol. 11 | Issue 4 | Jul – Sep 2024 | Peer Reviewed & Refereed

नई शिक्षा नीति 2020 का उच्च शिक्षा पर विशेष प्रभाव रहा है। इसमें न केवल शिक्षा के दृष्टिकोण में बदलाव की बात की गई है, बल्कि शिक्षकों की भूमिका में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन किए गए हैं। पहले जहाँ शिक्षक मुख्यतः ज्ञान के स्रोत माने जाते थे, अब उनकी भूमिका एक मार्गदर्शक, नवाचारी, और शोधकर्ता के रूप में विकसित हो रही है। यह बदलाव शिक्षा की गुणवत्ता और छात्रों के समग्र विकास के लिए आवश्यक है।

इस शोधपत्र का उद्देश्य उच्च शिक्षा में नई शिक्षा नीति के प्रभाव और शिक्षकों की बदलती भूमिका का अध्ययन करना है। नई शिक्षा नीति के तहत शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे केवल शिक्षा प्रदाता न होकर छात्रों के कौशल, नवाचार, और अनुसंधान के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँ। इस संदर्भ में, शिक्षकों को न केवल अपने पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों को सुधारने की आवश्यकता है, बल्कि उन्हें डिजिटल तकनीक और नवाचारी शिक्षण विधियों को भी अपनाना होगा।

पुरानी शिक्षा नीति और नई शिक्षा नीति के बीच तुलनात्मक अध्ययन:

1. **शिक्षा का उद्देश्य:**
    - **पुरानी शिक्षा नीति (1986):** मुख्य रूप से साक्षरता बढ़ाने और शिक्षा तक पहुंच प्रदान करने पर केंद्रित थी। रोजगार-केंद्रित शिक्षा पर कम ध्यान था।
    - **नई शिक्षा नीति (2020):** समग्र विकास, रोजगार कौशल, और 21वीं सदी के आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षा का उद्देश्य व्यापक बनाया गया है।
2. **स्कूली शिक्षा का ढांचा:**
    - **पुरानी शिक्षा नीति:** 10+2 प्रणाली का अनुसरण करती थी।
    - **नई शिक्षा नीति:** 5+3+3+4 प्रणाली पेश की गई है, जो प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ECCE) को महत्व देती है।
3. **माध्यम और भाषा नीति:**
    - **पुरानी शिक्षा नीति:** क्षेत्रीय भाषाओं को प्रोत्साहित किया गया, लेकिन अंग्रेजी माध्यम का वर्चस्व अधिक रहा।
    - **नई शिक्षा नीति:** बहुभाषिकता को बढ़ावा दिया गया है। प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में देने की सिफारिश की गई है।

ISSN: 2348-5612 | Vol. 11 | Issue 4 | Jul – Sep 2024 | Peer Reviewed & Refereed

4. **शिक्षा में तकनीकी उपयोग:**
    - **पुरानी शिक्षा नीति:** तकनीकी उपयोग सीमित था और केवल उच्च शिक्षा या विशिष्ट पाठ्यक्रमों तक सीमित था।
    - **नई शिक्षा नीति:** डिजिटल और तकनीकी आधारित शिक्षण पर जोर दिया गया है, जैसे ऑनलाइन पाठ्यक्रम, वर्चुअल लैब, और ई-लर्निंग।
5. **उच्च शिक्षा में सुधार:**
    - **पुरानी शिक्षा नीति:** विषयों के बीच कठोर विभाजन और संस्थानों में विविधता की कमी।
    - **नई शिक्षा नीति:** विषयों के लचीले चयन की अनुमति दी गई है और स्नातक पाठ्यक्रमों में मल्टी-डिसिप्लिनरी दृष्टिकोण अपनाया गया है। उच्च शिक्षा में जीईआर (Gross Enrollment Ratio) 50% तक बढ़ाने का लक्ष्य है।

नई शिक्षा नीति पुरानी नीति की तुलना में अधिक समग्र, लचीली, और कौशल-उन्मुख है। इसका उद्देश्य शिक्षा प्रणाली को अधिक समावेशी और भविष्य के अनुकूल बनाना है।

उच्च शिक्षा में शिक्षकों की पारंपरिक भूमिका

भारत की शिक्षा प्रणाली में शिक्षक को हमेशा एक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। शिक्षक न केवल ज्ञान के स्रोत माने जाते रहे हैं, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तिगत और नैतिक विकास में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। पारंपरिक रूप से, शिक्षक का कार्य केवल पाठ्यक्रम को पढ़ाना, परीक्षा लेना, और विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन का मूल्यांकन करना था। हालाँकि, समय के साथ यह भूमिका बदलती रही है, और अब शिक्षकों से यह अपेक्षा की जा रही है कि वे नवाचार, शोध, और डिजिटल शिक्षा के क्षेत्र में भी सक्रिय भूमिका निभाएँ।

नई शिक्षा नीति के तहत उच्च शिक्षा में शिक्षकों की बदलती भूमिका

नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत, शिक्षकों की भूमिका में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिलते हैं:

1. **बहु-विषयक शिक्षण और समग्र विकास**: NEP 2020 उच्च शिक्षा में बहु-विषयक दृष्टिकोण को बढ़ावा देती है। इसके तहत शिक्षक को केवल एक विषय तक सीमित नहीं रहना होगा, बल्कि उन्हें विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए कला, विज्ञान, और तकनीकी शिक्षा का समन्वय करना होगा।

ISSN: 2348-5612 | Vol. 11 | Issue 4 | Jul – Sep 2024 | Peer Reviewed & Refereed

2. **नवाचारी शिक्षण विधियाँ**: पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों की जगह नवाचारी और सहभागिता आधारित शिक्षण पद्धतियाँ अपना रही हैं। शिक्षकों से यह अपेक्षा की जा रही है कि वे समस्या-आधारित शिक्षा (Problem-Based Learning), परियोजना-आधारित शिक्षा (Project-Based Learning), और अन्य नवीन विधियों का उपयोग करें, जिससे विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार किया जा सके।
3. **टेक्नोलॉजी का प्रयोग**: नई शिक्षा नीति में डिजिटल शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। शिक्षकों को अब ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म्स और डिजिटल टूल्स का उपयोग कर विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए तैयार रहना होगा। इसके लिए उन्हें विभिन्न डिजिटल शिक्षण तकनीकों का ज्ञान और कुशलता प्राप्त करनी होगी।
4. **शोध और नवाचार में भूमिका**: उच्च शिक्षा में शिक्षकों की भूमिका अब केवल शिक्षण तक सीमित नहीं रही, बल्कि उन्हें शोध कार्यों और नवाचार में भी सक्रिय योगदान देना होगा। इससे न केवल शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार होगा, बल्कि विद्यार्थियों को भी शोध कार्यों में रुचि लेने के लिए प्रेरित किया जा सकेगा।
5. **मानव संसाधन विकास**: शिक्षकों को अब केवल शैक्षणिक ज्ञान तक सीमित नहीं रहना होगा, बल्कि उन्हें विद्यार्थियों के मानसिक, सामाजिक, और भावनात्मक विकास में भी योगदान देना होगा। यह उन्हें एक मार्गदर्शक और सलाहकार की भूमिका में परिवर्तित करता है, जहाँ उन्हें विद्यार्थियों के समग्र विकास का ध्यान रखना होगा।

शिक्षक के लिए आवश्यक कौशल और क्षमता

नई शिक्षा नीति 2020 के तहत शिक्षक की भूमिका केवल एक अध्यापक की नहीं है, बल्कि उन्हें एक मार्गदर्शक, प्रेरक, और शोधकर्ता के रूप में भी देखा जा रहा है। इस नई भूमिका को निभाने के लिए शिक्षकों को नए कौशल और क्षमताओं की आवश्यकता होगी।

1. समग्र शिक्षण दृष्टिकोण अपनाने की क्षमता

नई शिक्षा नीति समग्र और बहु-विषयक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करती है। इसलिए, शिक्षक को विभिन्न विषयों के ज्ञान के साथ-साथ विद्यार्थियों के मानसिक, शारीरिक, और नैतिक विकास का भी ध्यान रखना होगा।

ISSN: 2348-5612 | Vol. 11 | Issue 4 | Jul – Sep 2024 | Peer Reviewed & Refereed

- **बहु-विषयक ज्ञान**: शिक्षक को विभिन्न विषयों में ज्ञान होना चाहिए, ताकि वे एक समग्र दृष्टिकोण से विद्यार्थियों को शिक्षा दे सकें।
- **मनोवैज्ञानिक समझ**: शिक्षक को विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति को समझने और उनके व्यक्तिगत और सामाजिक विकास में मार्गदर्शन देने की क्षमता होनी चाहिए।

2. डिजिटल साक्षरता और तकनीकी कुशलता

डिजिटल युग में शिक्षा के क्षेत्र में प्रौद्योगिकी का महत्व बढ़ता जा रहा है। शिक्षकों को डिजिटल उपकरणों का कुशल उपयोग आना चाहिए।

- **ऑनलाइन शिक्षा**: शिक्षक को विभिन्न ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफार्मों का उपयोग करना आना चाहिए, जिससे वे विद्यार्थियों के साथ डिजिटल माध्यम से प्रभावी संवाद कर सकें।
- **तकनीकी समस्या समाधान**: शिक्षक को तकनीकी समस्याओं का समाधान करने और विद्यार्थियों को डिजिटल टूल्स का सही उपयोग सिखाने की क्षमता होनी चाहिए।

3. रचनात्मक और नवाचारी सोच

नई शिक्षा नीति शिक्षकों को रचनात्मक और नवाचारी शैक्षणिक दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती है। शिक्षकों को परंपरागत शिक्षण पद्धतियों से आगे बढ़कर नवीन शैक्षणिक तकनीकों का उपयोग करना चाहिए।

- **रचनात्मक शिक्षण पद्धतियाँ**: शिक्षक को रचनात्मक और समस्याओं का समाधान करने वाली शिक्षण पद्धतियों का उपयोग करना चाहिए, जैसे परियोजना आधारित शिक्षा, समस्या आधारित शिक्षा, और अन्य नवाचारी विधियाँ।
- **नवाचार को प्रोत्साहन**: शिक्षक को विद्यार्थियों में नवाचार की भावना को प्रोत्साहित करने के लिए नए-नए विचारों को अपनाने की क्षमता होनी चाहिए।

4. शोध कौशल

नई शिक्षा नीति शिक्षकों को अनुसंधान के प्रति प्रोत्साहित करती है। शिक्षक को अपने क्षेत्र में अनुसंधान करने और विद्यार्थियों को अनुसंधान के लिए प्रेरित करने की क्षमता होनी चाहिए।

- **शोध कार्य**: शिक्षक को अपने विषय क्षेत्र में अनुसंधान करने की योग्यता होनी चाहिए, जिससे वे अपने विद्यार्थियों को नवीनतम ज्ञान प्रदान कर सकें।

ISSN: 2348-5612 | Vol. 11 | Issue 4 | Jul – Sep 2024 | Peer Reviewed & Refereed

- **शोध मार्गदर्शन**: शिक्षक को विद्यार्थियों को अनुसंधान कार्यों में मार्गदर्शन देने की क्षमता होनी चाहिए, जिससे विद्यार्थी अनुसंधान के प्रति रुचि लें और उसमें योगदान कर सकें।

5. संवाद कौशल

शिक्षक को प्रभावी संवाद करने की क्षमता होनी चाहिए, जिससे वे विद्यार्थियों के साथ संवाद कर सकें और उन्हें प्रेरित कर सकें।

- **स्पष्ट और प्रभावी संवाद**: शिक्षक को विषयों को सरल और प्रभावी ढंग से समझाने की क्षमता होनी चाहिए।
- **सुनने की क्षमता**: शिक्षक को विद्यार्थियों की समस्याओं और विचारों को सुनने और समझने की क्षमता होनी चाहिए, जिससे वे विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा प्रदान कर सकें।

शिक्षकों के सामने आने वाली चुनौतियाँ

नई शिक्षा नीति के तहत शिक्षकों की बदलती भूमिका के साथ कई चुनौतियाँ भी सामने आती हैं। इन चुनौतियों का सामना करने के लिए शिक्षकों को नए कौशल और तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता होगी:

1. **टेक्नोलॉजी की कमी**: भारत के कई उच्च शिक्षा संस्थानों में अब भी डिजिटल शिक्षा के लिए आवश्यक तकनीकी सुविधाओं की कमी है। इससे शिक्षकों को नवीनतम शिक्षण पद्धतियों और डिजिटल टूल्स का उपयोग करने में कठिनाई होती है।
2. **प्रशिक्षण की आवश्यकता**: शिक्षकों को नई शिक्षा नीति के तहत तकनीकी और नवाचारी शिक्षण विधियों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए नियमित प्रशिक्षण की आवश्यकता होगी। इससे वे न केवल डिजिटल शिक्षा में कुशल बन सकेंगे, बल्कि शोध और नवाचार में भी अपना योगदान दे सकेंगे।
3. **मनोवैज्ञानिक चुनौती**: शिक्षकों पर नई भूमिका और जिम्मेदारियों का बोझ भी मानसिक तनाव का कारण बन सकता है। उन्हें न केवल शैक्षिक जिम्मेदारियों का निर्वाह करना है, बल्कि विद्यार्थियों के मानसिक और भावनात्मक विकास का भी ध्यान रखना है।
4. **शोध और नवाचार में योगदान**: हर शिक्षक को अनुसंधान और नवाचार के क्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त नहीं होती, जिससे इस दिशा में शिक्षकों के सामने चुनौतियाँ उत्पन्न

ISSN: 2348-5612 | Vol. 11 | Issue 4 | Jul – Sep 2024 | Peer Reviewed & Refereed

होती हैं। उन्हें इस क्षेत्र में योगदान देने के लिए विशेष प्रशिक्षण और सुविधाओं की आवश्यकता होगी।

समाधान और सुझाव

नई शिक्षा नीति के तहत शिक्षकों की बदलती भूमिका का सामना करने के लिए निम्नलिखित उपाय अपनाए जा सकते हैं:

1. **प्रशिक्षण कार्यक्रम**: शिक्षकों के लिए नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए, जिससे वे डिजिटल शिक्षा, शोध, और नवाचारी शिक्षण विधियों में पारंगत हो सकें।
2. **तकनीकी सुविधाओं का विकास**: उच्च शिक्षा संस्थानों में डिजिटल टूल्स और ऑनलाइन प्लेटफार्म्स के उपयोग के लिए आवश्यक तकनीकी सुविधाओं का विकास किया जाना चाहिए, जिससे शिक्षकों को डिजिटल शिक्षा प्रदान करने में सुविधा हो।
3. **शोध में सहयोग**: शिक्षकों को अनुसंधान कार्यों में प्रोत्साहित करने के लिए अनुदान और सुविधाएँ प्रदान की जानी चाहिए, जिससे वे नवाचारी शोध कार्यों में सक्रिय योगदान दे सकें।
4. **समर्थन प्रणाली**: शिक्षकों के मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य का ध्यान रखने के लिए संस्थानों में विशेष सहायता कार्यक्रम संचालित किए जाने चाहिए, जिससे वे अपनी नई जिम्मेदारियों को प्रभावी ढंग से निभा सकें।

निष्कर्ष

नई शिक्षा नीति 2020 उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी बदलाव लाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इसके तहत शिक्षकों की पारंपरिक भूमिका को नए सिरे से परिभाषित किया गया है, जिससे उन्हें केवल ज्ञान प्रदान करने वाले के रूप में नहीं, बल्कि एक मार्गदर्शक, शोधकर्ता, और नवाचारी के रूप में देखा जा रहा है। इस बदलाव के साथ शिक्षकों को नई चुनौतियों का सामना करना होगा, जिनका समाधान प्रशिक्षण, तकनीकी सुविधाओं के विकास, और अनुसंधान में सहयोग से किया जा सकता है। नई शिक्षा नीति के तहत शिक्षक की भूमिका में व्यापक बदलाव किए गए हैं। इसके अंतर्गत शिक्षक को नवीन शैक्षणिक विधियों, डिजिटल शिक्षा, शोध कार्यों, और विद्यार्थियों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। इसके लिए उन्हें नई शिक्षा नीति के तहत विशेष प्रशिक्षण और विकास के अवसर प्रदान किए जा रहे हैं। शिक्षक के लिए आवश्यक कौशल और क्षमताओं का विकास इस बात को सुनिश्चित करेगा

कि वे नई चुनौतियों के लिए तैयार हों और विद्यार्थियों को भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए सक्षम बना सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डा. सुरेन्द्र पाल रॉयल. 2018 "प्रभावी शिक्षा के संवर्द्धन में शिक्षक की भूमिका ". International Education Journal.; 8(2):135-137.
2. कुमार सिंह, राजेश (2020) **नई शिक्षा नीति 2020: एक समग्र अध्ययन**, नई दिल्ली: शिक्षा भारती प्रकाशन
3. डॉ सोमेश नारायण. 2020. "नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति और शिक्षक शिक्षा." IJCRT, 8(9)5-8
4. तिवारी, अरुण कुमार (2021) **शिक्षा में शिक्षक की भूमिका: नई चुनौतियाँ और अवसर**, वाराणसी: भारतीय शिक्षा प्रकाशन
5. वर्मा, प्रीति (2021) **उच्च शिक्षा में सुधार: नई शिक्षा नीति का प्रभाव**, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन
6. चन्सौरिया, मुकेश. 2009. "भारत में उच्च शिक्षा: समस्याएं एवं समाधान",. International Journal of Advances in Social Sciences. 11(5): 27-30
7. प्रीती. 2022. " शिक्षा के क्षेत्र मे राष्ट्रीय शिक्षा नीति की भूमिका" International Journal of Hindi Research. 8(1). 8-12